

ASMA ARCHIVES	
3423	
Date Recd. No. 10	



श्री १

[illegible]

दीक्षा
२

मदेवता॥ आनन्दुवनं नूपं॥ कमलपुत्रवनं॥ वगुर्वहं वगुर्वहं॥ पीतांगपीतवाससा॥ साक्षात्पुत्रं
वपुर्वहं॥ नमस्तु पुत्रपादक॥ पुत्रपूजाय वैशुल्यं॥ पुत्रपुत्रसुदुर्लभं॥ पुत्रवाचापुसादेन॥ पित्र
सिद्धिं वजायत॥ सफज्जन्मकर्मपापं॥ सर्वव्याधिविवर्जितं॥ शुक्लकपियया पुत्रं॥ उकाकालानु
वर्तिनः॥ पुत्रपादमुर्वगंगा॥ पुत्रमुल्लिखनदेवता॥ पुत्रवाचावत्कालि॥ पुत्रवाचापनीपदी॥
॥ रुतिर्गंगाधनवृक्षल्यं पुत्रसर्वसमाप्तं॥ ॥ दक्षिणा॥ अत्रगंगादि॥ अत्रसंकल्प॥ नवात्माः
पुत्रसूर्ययः॥ सधावास्यामाना रुद्रमन्त्रसंकल्पसिद्धिनमु॥ अत्रसंकल्पसिद्धिनमु॥ रुद्रिपुत्रश्रम
रुद्रपूजाविधि॥ ॥ तत्रागुत्रमपुत्र॥ पुत्र्यादुवनेनायकमपुत्रलयाय॥ ॥ लंवनसय
मंत्र॥ उं कि नि र वि र्वा क न ना य ऊं रु ॥ ॥ पिधान ३॥ ॥ नासाकयनैराय॥ एकाकयद

७
२

पदलप॥ उं मधुकेरुमधुन॥ रुतिनासि वसुधना॥ तदावसमनार्थयः॥ सिद्धमिर्गंधवालिना॥ ॥
ल॥ रुवलाका॥ मंत्र॥ उं रुद्रवदुर्लभं॥ पुत्रस्वाहा॥ ॥ रुतिनापुत्रि वि॥ रुद्रगंधवा
लिद्यवपिता॥ पुत्रजन्मकर्मपापं॥ रुद्रमन्त्रकर्मपापं॥ रुद्रजन्मकर्मपापं॥ एहि रुद्रा
रुद्रपुत्र॥ कनपुष्टा रुद्रलिङ्गत्वा॥ शमय कनवन्तसा॥ अत्रपुलादुर्लभं॥ पुत्रस्याय
विहिन्नया॥ पुष्टविविधिकाका॥ जायगविविधेकुल॥ नसर्वदमनार्थं॥ वदुनु
निवसर्वदा॥ पुनरुवलादथथलं॥ मंत्र॥ उं वलमकर्मकनमवलज्जं रुद्रस्वाहा॥
॥ स्नाय॥ पीतमृत्वासादि॥ मपुत्रदामस॥ अदतनय॥ मंत्र॥ उं रुद्रमपुत्रनायनः
म॥ ॥ पतवासनपकयादाववाय॥ गा ३॥ स्नानकवाय॥ पिथमपुत्र १०॥ थन

दीक्षा
३

दधूमलुल ॥ ध्वनंदमलुल ॥ मधुमलुनम ॥ वत. सिंदन. जाना. वाक्कादन. कलस. गवय. गवाः
लतया ॥ ॐ ॥ पूजनयाय ॥ नवात्माकृतनदागसपूजा ॥ पूर्व ॥ ॐ ॥ नानिकनायनम ॥ दक्षिण
॥ ॐ ॥ विद्याकलायनम ॥ उत्तर ॥ ॐ ॥ निवृत्तिकलायनम ॥ पश्चिम ॥ ॐ ॥ प्रतिष्ठाकलाय
नम ॥ अग्नि ॥ ॐ ॥ हंसाकातीनायनम ॥ नैमल्य ॥ ॐ ॥ यंसाकायनम ॥ वायु ॥ ॐ ॥ वीरिः
यायनम ॥ श्रीमान ॥ ॐ ॥ वं प्रतिष्ठायनम ॥ अध ॥ श्री अधस्तु न्दायनम ॥ उर्ध्व ॥ ॐ ॥ उर्ध्वस्तु
यनम ॥ ॥ पुनरवकलमलुल पूजन ॥ ॐ ॥ गगननन्ददवपादकी ॥ पूर्व ॥ कुम्भानन्ददवपाद
की ॥ अग्नि ॥ ॐ ॥ पद्मानन्ददवपादकी ॥ दक्षिण ॥ ॐ ॥ हं नवानन्ददवपादकी ॥ नैमल्य ॥ ॐ ॥ दवान्
न्ददवपादकी ॥ पश्चिम ॥ ॐ ॥ कमलानन्ददवपादकी ॥ वायु ॥ ॐ ॥ निवानन्ददवपादकी ॥ उत्तर ॥ ॐ ॥ क

श्री
३

लमात्र ॥ आकाशसिद्धिपवरुण ॥ दिवाकृतनदिवका ॥ तस्मै श्रीगुरुव नमः ॥ कर्मलमनसावाच
गुरुर्लभिकिवत्सला ॥ गलिर्नृपालमर्थव ॥ सगुनानिवदयत ॥ गुरुदवामहादवा ॥ गुरुदवमरु
त्वेन ॥ गुरुदवाविनूपादी ॥ सर्वदवासयागुर्न ॥ प्रत्यक्षवपराक्षव ॥ स्मृत्वा श्रीपादकाद्वय ॥ मुच्य
ते तत्तुल्यमलिरुच्य ॥ सकर्थमानुषागुर्न ॥ निवादितामिदं नार्थ ॥ जावर्ज्ज्वलनीवकी ॥ गवैवरुग
वान्नाथ ॥ गालमरुत्वेवहिस्तना ॥ गुरुगुरुन ॥ नैव ॥ यवान्यगुरुज्ञानव ॥ मृत्ययकिमिकाय
ह्य ॥ तर्षापादं नमाम्यहं ॥ पादपापुप्रसादन ॥ जायतवृद्धिर्लभ्यमी ॥ ॐ ॥ लाक्कदलितं यन ॥ तस्मै श्रीगु
रुव नमः ॥ अग्न्यादि ॥ ॥ अर्घविय ॥ गीरव ॥ इदं ॥ अलि ॥ लकृत ॥ कृष्ण ॥ हा ॥ गवय ॥ गवाल ॥ श्व
ततया ॥ अर्घविय ॥ वाक् ॥ अश्ववालाहाकल्य ॥ अस्मत्तुम्भक ॥ अम्भकनामगुना नाधेनाय
ना

दीक्षा-
७

समयवलि सुनिर्वाहसर्वाधिकार... दीक्षामित्यर्थेन... अग्नयश्च पूषा धूपदीपगन्धचन्दनाक्षमसिंदूरः
ऊन... हलनेव यत्र लिङ्गसुमत... सात्तादनसापस्कनर्णायामुल्लाय... सर्वत... सर्वसंप्रतिर्णयः
सुखमहर्षिपदले... उद्धमर्षिन्नमः॥ अथर्षिदवदवलि... पूषासुर्षिममेकालिक... गृहानार्थमयादले
पुलादपनमप्यन॥ उक्तीसोऽद्धमर्षिगृहानस्वाहानस्वाहा॥ गुनुयालाहामिसविय॥ पाऽनवृस्यगु
वृयाखालस्यैवान॥ पूषा अलिपदनप॥ उक्तीसोऽद्धमर्षिगृहानस्वाहानस्वाहा॥ गुनुयालाहामिसविय॥ पाऽनवृस्यगु
लक्ष्मीकामि... ऊनमृष्यऊनाधिक॥ कर्मनामनसावावा... मयात्मा विनिवदिता॥ अनृगृहं उमासिद्धि
यकचित्सासुर्षिना॥ आह्वयदिप्रमानस्य... प्रमानं वा वसुधायादि॥ यद्ययसुगुनानाहु... संप्र
तीरुवतामम॥ विनिर्गर्तुवा... मानदवर्षकद्यु॥ तदिदमर्थसमनाथ... वाचनुसुनर्ण

७
६

मम॥ तस्मात्तु कथयार्थ... दीक्षादानं च देहि मे॥ दीयत ह्यनसैरावी... दीयत कर्मवासना॥ तनदीक्षीप्रभा
लिव... दहिम कथयामम॥ गुनुयाकनमस्त्वानयाय॥ ॥ मणुलजवनधियावतम॥ खवनगुनुस्त्वानक
नन॥ कयगुद्धिनम॥ नननममु॥ वाक्गुद्धिनम॥ नननममु॥ काय... वाक्... चिरु... सर्वात्मन स्वमव
नमः॥ नननममु॥ कर्मतुमि॥ त्वंगमिसर्वरुगानी... संहितातुवना॥ श्रीगन्धनगरुगानी... दृष्टत्वेप
नमः॥ नन॥ नवनाथसाककर्तन॥ प्रनार्मकत्वा॥ बलि॥ मणुलस... लखधालहोयक॥ श्रीसमर्त
न॥ उक्तीसोऽद्धमर्षिगृहानस्वाहानस्वाहा॥ गुनुयालाहामिसविय॥ पाऽनवृस्यगु
व॥ उक्तीसोऽद्धमर्षिगृहानस्वाहानस्वाहा॥ गुनुयालाहामिसविय॥ पाऽनवृस्यगु
उवदवपुसनागुनुवनमः॥ अग्नयश्च पूषा धूपदीपगन्धचन्दनाक्षमसिंदूरः
ऊन... हलनेव यत्र लिङ्गसुमत... सात्तादनसापस्कनर्णायामुल्लाय... सर्वत... सर्वसंप्रतिर्णयः
सुखमहर्षिपदले... उद्धमर्षिन्नमः॥ अथर्षिदवदवलि... पूषासुर्षिममेकालिक... गृहानार्थमयादले
पुलादपनमप्यन॥ उक्तीसोऽद्धमर्षिगृहानस्वाहानस्वाहा॥ गुनुयालाहामिसविय॥ पाऽनवृस्यगु
वृयाखालस्यैवान॥ पूषा अलिपदनप॥ उक्तीसोऽद्धमर्षिगृहानस्वाहानस्वाहा॥ गुनुयालाहामिसविय॥ पाऽनवृस्यगु
लक्ष्मीकामि... ऊनमृष्यऊनाधिक॥ कर्मनामनसावावा... मयात्मा विनिवदिता॥ अनृगृहं उमासिद्धि
यकचित्सासुर्षिना॥ आह्वयदिप्रमानस्य... प्रमानं वा वसुधायादि॥ यद्ययसुगुनानाहु... संप्र
तीरुवतामम॥ विनिर्गर्तुवा... मानदवर्षकद्यु॥ तदिदमर्थसमनाथ... वाचनुसुनर्ण

दीक्षा

७

मलुल विसर्जनं ॥ मध्यपुष्पातामूनादि दक्षिणदि ॥ गुनवदातयं ॥ वाक्का ॥ उर्वं वृहनि सूनदयः स
उसन्नव वतसा ॥ दातुर्महसिमनार्थं ॥ दीक्षादानं मनुरुमै ॥ गुनस्यं धाय ॥ ददाति महत्तपुत्रं ॥ स
उसन्नव वतसा ॥ गुनवतग प्रसादनं ॥ दीक्ष्यनस्य प्रसादतः ॥ ॥ उवम सुगृहीत्वा ॥ मलुल वि
सर्जनं प्राय ॥ संहार कुमनव ॥ मध्य सर्वदत्ता ॥ नानामिकां सुसूया ॥ गन ॥ नात्मविद्या शिवप्रसै
नो सु ॥ धाय ॥ दत्तसिंधिलका गमिया ॥ स्नानदक्ष काया व द्दय ॥ उं नमः निर्माल्यं वन्दना धाय नम
॥ निर्माल्यदका ॥ दायान् इति न कान सैता ॥ लाहात सिया ॥ ॥ इति गुनं अय समलुलः
जा विधिसमाप्य ॥ ॥ ततो विद्यापीठे स्थाप्य मलुल कृति ॥ वाक्यादथे ल ॥ नासाकन ॥ पत
वासनन ॥ स्वगुन उवाक्यादग ॥ पूजावाय ॥ सकलनाद ॥ गुनमलुलयाथे द ॥ मुनिशकादवता

७

समस्तं मात ॥ अथ गुनमलुलाकारं ॥ दत्त ॥ वदक ॥ गण ॥ उका ना ॥ बुका पी ॥ वाका ॥ ने मान्ताह
व्यामाकाह ॥ स्यामानका विषय नर्मत्र काय रुका स्त ॥ सौ गण सुति ॥ दवस्कमता पूजा ॥ अरि स
षा ॥ अरिदाद ॥ यथा विधिसमय ॥ इति विद्यापीठे मलुल विधिसमाप्य ॥ ॥ तमात्र विवा स
न विधि ॥ ६ इति पाया ॥ माल द्दय ॥ व सु हल ॥ द्दथ क द्दयाथे ॥ गुनमलुल ॥ दवमलुल वाय ॥
॥ ॥ सूर्यार्चादि एकयादावथे ले ॥ पतवासन ॥ एकयादा स्तं ताथयाद वाय ॥ द्दथथे पूजानां ॥ मुनि ह
थ क द्दयाथे विधान ॥ ॥ विद्यापीठग्रस ॥ द्दथ क द्दयाथे वाक्यादाव ॥ मलुलथे ल ॥ पटवासनन
स्तं ता ० वाक्यादाव वाय ॥ द्दथ क द्दयाथे ॥ सौ गण पांग ॥ मरुन विधानथे पूजायाय ॥ मलुल स
स्नानदायाज दवस्कत ॥ ॥ तमा मलुलादि दवात्र विधान ॥ ॥ दवस्क पूजा सौ गन ॥ सूर्यार्घ्य ॥

दीक्षा-
२

धनदत्तकासुलक्षणी ॥ गतादत्तकासुलक्षणी ॥ पंचासुतस्त्रानयावका ॥ सिंहासनायपादका ॥ त्रैदसिः
न्यायपादका ॥ ध्यान ॥ दक्षिणीवमहाद्याना ॥ पुनासनीलसाहिता ॥ जेवनाउग्रनूपाव ॥ गिनगत्रकनामि
नि ॥ उर्वध्यालाजयदवी ॥ वाउगसुखनूपिनी ॥ कर्हिकपोलहस्ताव ॥ सर्वपापपुनासनी ॥ ॐ तिध्यानः
पूषीनमः ॥ त्रैजदसिनायपादका ॥ दद्यादि ॥ घट्टग ॥ त्रैजवमन्याथवलिगुक्ररसाहा ॥ त्रैजपीडी
कुलपुत्रवदकनाथायवलिगुक्ररसाहा ॥ आवाहनादिधनमर्जी ॥ जाप ॥ १०० ॥ ॥ गतालिलासु
जा ॥ पंचासुतस्त्रान ॥ अलिस्त्रान ॥ वज्रपद्ममलुर्लकावयत् ॥ रुमपद्मापनिष्ठाया ॥ द्वादपातनुपाथ ॥
पूजन ॥ निवश्य ॥ ॥ गतालिलासुलक्षणी ॥ गतालिलासुलक्षणी ॥ गतालिलासुलक्षणी ॥ गतालिलासुलक्षणी ॥
कारुणीपादका ॥ ॐ सर्वजनमाहिनीपादका ॥ ॐ सर्वजनजम्बुनीपादका ॥ ॐ सर्वजननरु

दी
२

मूनीपादका ॥ ॐ सर्वजनमाहिनीपादका ॥ ॐ सर्वजनजम्बुनीपादका ॥ ध्यान ॥ त्रैलिलापपद्ममि
ल्लवन्दपनमल्लव ॥ ॐ कवकुत्रिनर्पव ॥ जटायु ॥ पवीतनी ॥ उद्धृष्टिकर्हिकार्ण ॥ ॐ नयपद्ममिवा ॥
मूलाकविन्दमर्जी ॥ वाउगसुखनूपिनी ॥ उर्वध्यालाजयदवी ॥ निलापुपावताविनी ॥ गतागंगसुना
दातनुलीशमनत्रयी ॥ सुप्रजर्माजिनीपाप ॥ सर्ववर्तिनिलापदी ॥ दृष्टवदाविदसुमनी ॥ ॐ धिर्नरुलदायक
॥ ध्यानपूषीनमः ॥ त्रैलिलापुपावताविनी ॥ त्रैलिलापुपावताविनी ॥ त्रैलिलापुपावताविनी ॥ त्रैलिलापुपावताविनी ॥
निमृडा ॥ जाप ॥ १०० ॥ धननिलापुजा ॥ ॥ गतालिलासुलक्षणी ॥ वज्रपद्ममलुर्लकावयत् ॥ रुमपद्मापनिष्ठाया ॥ द्वादपातनुपाथ ॥
युवपातनुपाथ ॥ वज्रपद्ममलुर्लकावयत् ॥ ध्यान ॥ कविनीलनूपव ॥ वकासुनूहमालिनी ॥ उकोलीला
वर्तनीनी ॥ नीवनीनरुमनिर्ह ॥ वकासुनूहमालिनी ॥ वकासुनूहमालिनी ॥ वकासुनूहमालिनी ॥

[illegible][illegible]

दीक्षा
१३

नहेनवायपादकी॥पूर्वादि००॥पूजा॥ ॥हनुकहेनवायपादकी॥प्रिनाककहेनवायपाद
की॥त्रिगिवनालहेनवायपादकी॥त्रिगिदिक्काहेनवायपादकी॥कालाकहेनवायपादकी॥कपालि
सहेनवायपादकी॥हीमनूपहेनवायपादकी॥पूर्वादि००॥शानाकी॥पूजा॥ ॥बोनालिमिधनपूजा॥
जंहेनवानन्दवपादकी॥यामा॥किरवा॥वीना॥कमूडा॥कपका॥ध्रुववधा॥गजवधा॥पद्मा॥नला
॥लाका॥पाला॥देवा॥यका॥हेनवा॥वीना॥मत्स्याकमला॥मनिका॥कीर्तिका॥नीला॥प्रीयना॥स्वववा॥
गर्भा॥विमला॥हिंहा॥व्याघ्रा॥ऊया॥नला॥यामा॥नामा॥सहजा॥उमना॥कमूडा॥खमूदिखा॥रुनूसा
सुना॥सूर्या॥अमना॥यागा॥विना॥खरुना॥हागा॥वीना॥उला॥उमना॥पद्मा॥नला॥कलवा॥पद्मा॥क
लवा॥उरुनमना॥गुहा॥मन्त्रया॥खड्ग॥लया॥वका॥सहजा॥गजवा॥कमूदा॥पद्मा॥हेनवा॥देवा॥

५१
१३

श्रमिका ८८

कमला॥लिवा॥नामा॥कमूडा॥सुना॥नीला॥द्ववहा॥गर्भपूका॥हिंहा॥ऊया॥विऊया॥मिगा॥सुडा॥विमला
॥खजा॥सुडा॥नला॥कलवा॥अमना॥यागा॥००॥मिवतुवालिहिद्वानजमपुल्लमधपूजयत्॥८४॥नमावलि
॥पुंयवलि॥००॥न्यादिवलि॥१०॥त्रिनिर्गवलि॥०॥हनुकादिवलि॥०॥थगवलि॥ ॥नमादलमूडापूजा
॥जंमौहिद्वामनकमूडा॥जिनायनमपादकी॥कमूडा॥जिना॥जंमौहिद्वामनमपादकी॥वलि॥दक्षिणयाग
पना ॥का॥३॥जंमौहिद्वामनकमूडा॥वलि॥नेमखसुरि ॥४॥जंमौहिद्वामनमपादकी॥वलि॥
लि॥प ॥लिमसा॥नादहिंहा॥३॥जंमौहिद्वामनमपादकी॥वलि॥वायवा॥पात्र॥३॥जंमौहिद्वामनमपादकी॥वलि॥
जंमौहिद्वामनमपादकी॥वलि॥उरुवसमाला॥ ॥१॥जंमौहिद्वामनमपादकी॥वलि॥
उग्रसमाला॥०॥जंमौहिद्वामनमपादकी॥वलि॥नेमखसुरि ॥४॥जंमौहिद्वामनमपादकी॥वलि॥

दीक्षा-
१४

वीसनपादकी॥ वलि॥ ॐ नमस्तुकापिनी॥ १०॥ ॥ ॐ निदसुमृडापूजाविधि॥ ॥ गतावीनमूर्तिक
लसपूजा॥ ॥ वीजासीसिद्धामलयादवन॥ मवीसनय॥ हिंदुनिनहनयिनक॥ ५॥ पर्वसूयकानयिने॥
हिंदुनिनहनहनयक॥ कादुक्त॥ विप्रिनिवृद्ध॥ विनय॥ कर्तुध्वज॥ सर्वलीकाह॥ पुत्रनयाय॥ दद्यापू
लीकास॥ ॥ ॐ अपद्यास्रायनमधार्प॥ ॥ ॐ नन्दलकिरेनवनन्दवीनाधिकय॥ ॥ पादकी॥ ॥ वृक्षाः
न्यादि॥ ॥ त्रिनिताङ्गमदि॥ ॥ अद्याना॥ ॥ ॐ ॥ मउगवलि॥ आवाक्यानिमृडा॥ ॥ जाय१०॥ ॥ स्नाय
वर्तुमार्ग्यादि॥ ॥ ॐ निदद्याधियास॥ ॥ नविधिसमाय॥ ॥ वलिहायका॥ ॥ मयवलि॥ ॥ अजः
नादिवलि॥ वर्तुमष्टीवलि॥ आगिनीव॥ ॥ लि॥ ॥ नमिदलि॥ महावलि॥ लोकाय॥ हावलि॥ आवाक्या
आनिमृडा॥ धूप॥ दीप॥ नेवय॥ जायमालका॥ स्नाय॥ मालका॥ ॥ उकाय॥ ॥ अर्वपूर्व॥ वलिविस्तृन॥ गल

७
१४

वाकासवलिलाहासवाय॥ ॐ निदद्यावासनदवाचनविधि॥ ॥ गतासिख्यत्रिधानयाय॥ गुननलि
त्वासाधलया॥ लोसातावरुय॥ नृवकुनादि॥ ॥ उका॥ पल्कायगल॥ वलयनिसवलिविध॥ ॥ अद्यानामुपैय
॥ अमुनवगुयथवलि॥ दीपनाहवका॥ ॥ उकुल॥ निखाग॥ ॥ सायखाहा॥ नारि॥ ददि॥ मधि॥ ॥ मालका
नकाय॥ आसगल॥ विद्यागल॥ निवगल॥ वर्तुमाल॥ वाहा॥ पाजा॥ ॥ अर्चकागल॥ खहाय॥ अमुपैयन
मूलननिविदल॥ ॥ अमुगल॥ अमुगल॥ कववनावगुल॥ ॥ स्त्रिकासग॥ लिखा॥ नः
जायनि॥ ॥ दद्यापूजा॥ गतासिख्यपनिष्ठापय॥ ॥ गुननसाधलया॥ सर्वघजङ्गमूलपिपुला॥ ॥ ॐ ॥
ॐ ॥ पकाय॥ ॥ अद्यागिन्धुयुला॥ ॥ ॐ ॥ पनाय॥ ॥ ॐ ॥ आजातासिख्यकोलिक॥ ॥ ॐ निमूलघ
मउगन॥ लिखावर्तुपास॥ १॥ ॥ मूलखड्गन॥ ॥ अमय॥ ॥ ददय॥ ॥ नारि॥ ॥ गुक॥ ॥ जानदय

उ॥ पादद्वय॥ हस्तद्वय॥ ८॥ धनस्तानसुखउगनकुपालकुपालषउगनपाल॥ ॥ पुनस्त
धयत॥ प्रित्वन॥ जंजलिवतत्वाधिकानस्तौपनायेतिवसपादकौ॥ निनशि॥ जंजालसतत्वाधिकान
जांजौकूँरुपनायद्वयपादकौ॥ हदि॥ जंजुधानजौपनमधानकूँधानरूपरुंधानामरुवी
हीमहीषलेधमरपिवरुनूरनवररुंधौकूँरुविद्यातत्वाधिकानपनापनायेपादकौ॥ गु
क॥ ॥ तितित्वन॥ ॥ जंजुशिवीतत्वाधिकानत्राधानपादकौ॥ आधनस॥ जंजुपतत्वाधिवलि
पादकौ॥ लिंग॥ जंजुगजतत्वाधिकाननालोपादकौ॥ नाहि॥ जंजुवायतत्वाधिकानद्वयपादकौ
॥ द्वय॥ जंजुआकाततत्वाधिकानकलपादकौ॥ क॥ ॥ जंजुवृक्षतत्वाधिकानजानद्वयपाद
कौ॥ जानद्वय॥ जंजुविष्णुतत्वाधिकानपादद्वयपादकौ॥ पादद्वय॥ जंजुनंदतत्वाधिकानहस्तद्वय

[illegible]

दीक्षा
१४

पादकी॥ अहं मालिनी दय पादकी॥ अहं निवायेक लपादकी॥ अहं वसुमत्वाये मुख पादकी॥ अ
हं नासा नृमो ये नासा पृथ दय पादकी॥ अहं कटकाये कर्ण दय पादकी॥ अहं हृदिके निश
क पादकी॥ अहं मुख नि पादकी॥ ॐ मित्रा द नमः ॥ ॐ अहं सर्व रूप दय पाद
की॥ अहं मृग सजा मालिनी हृदि नि नमः ॥ अहं मृग द व द ति नमः ॥ अहं पि वा ध नि वा ये वो
षट्॥ अहं वज्रिलि व कुध नाय सग तु क व वो द्वा॥ अहं ना वा नि ल म ल फ ल कि ॥ अहं मृग ज नि न
न प्र या य व षट्॥ अहं न म मृग मृग न ल कि लि लि द्वा म हा पा लु प ना फा य स र म्ना का य द्वा ॥
ॐ मित्रा द नमः ॥ ॥ अहं ना दि न्ये लि वा यी पादकी॥ अहं ग्री स न्ये उ र्ध्व नि वा माला यी पाद
की॥ अहं नि वृत्ते पूर्व नि वा माला यी पादकी॥ अहं प्रति ष्ठा ये द कि ल नि वा माला यी पादकी॥ ॐ अहं वि

७
१४

याये उन्न नि वा माला यी पादकी॥ अहं वृत्ते पश्चि म नि वा माला यी पादकी॥ अहं वाम मृग ये पि ग्री य न
पादकी॥ अहं प्रिय द ल न्ये नृ दय पादकी॥ अहं ना वा य न्ये कर्ण दय पादकी॥ अहं ना दि न्ये द कि ल क र्ण
रूप लो पादकी॥ अहं प्र हृय वाम क र्ण रूप लो पादकी॥ अहं ग्री य क र्ण ना सा पृथ दय पादकी॥ अ
हं वज्रिलो व कु पादकी॥ अहं कटका ये द दय पादकी॥ अहं कालिका ये उ र्ध्व द ल ल य को पादकी॥
अहं नि वा ये त्रि द ल ल य को पादकी॥ अहं मृग ना ये उ र्ध्व पादकी॥ अहं वि ना ये मृग पादकी
॥ अहं मा या द वो जि का यी पादकी॥ अहं वा गी न्ये वा वा यी पादकी॥ अहं नि वि वा हि लो क ल पाद
की॥ अहं ही ष लो द कि ल वा द लि ख न पादकी॥ अहं वा य य गा ये वाम वा द लि ख न पादकी॥ अ
हं वा मा ये द कि ल वा द लो पादकी॥ अहं पि ना य वो वाम वा द लो पादकी॥ अहं पूर्व मा ये क व न ल

दीक्षा-
११

द्वयपादकी॥ॐ मंजुकात्रिनेदक्षिणहस्तकनीगुलीपादकी॥ॐ अंकुशेवामहस्तकनीगुलीषुपादकी
॥ॐ नंदीपिनेलूलदण्डदक्षिणहस्तपादकी॥ॐ अंजयनेत्रिलूलात्रेदक्षिणहस्तपादकी॥ॐ टंकपालि
नेकपालवामहस्तपादकी॥ॐ पंपावनेद्वयमध्यपादकी॥ॐ हं त्रिमिकायेषां वामपादकी॥
ॐ संपूर्वात्मनदक्षिणपार्श्वपादकी॥ॐ मं० कृ० वामपादकी॥ॐ कृ० गलेदक्षिणहस्तः
नपादकी॥ॐ लंपूठनायेवामहस्तनपादकी॥ॐ श्रीश्रीमाद्येपयद्वयपादकी॥ॐ पंलम्बोदद्वयपादकी॥
ॐ कंहात्रिनेनाहिमध्यपादकी॥ॐ मंमहाकालेनितम्बपादकी॥ॐ लंकुसपायुधयेगुह्यपादकी॥
ॐ मं० लुकादयेगुह्यपादकी॥ॐ तंतानादयेउल्लयपादकी॥ॐ अं० हानेदक्षिणजानपादकी॥ॐ अं० दि
कोयेवामजानपादकी॥ॐ अं० मययेदक्षिणजंघायोपादकी॥ॐ दंदयेदक्षिणपदपादकी॥ॐ अं०

जी
११

रुक्मात्रिनेवामपादपादकी॥ॐ मिमालिनेन्यासा॥ ॥ॐ अं० श्रीकलूललाठपादकी॥ॐ अं० श्रीन
नमगुलवकुपादकी॥ॐ अं० लु० श्रीगदक्षिणनयपादकी॥ॐ अं० श्रीमूर्ध्ववामनयपादकी॥ॐ अं० त्रिमनिनद
क्षिणकपर्णपादकी॥ॐ अं० श्रीश्रीलवामकपर्णपादकी॥ॐ मं० मिथिलदक्षिणनासापतपादकी॥ॐ मं० लालः
रुतिगवामनासापतपादकी॥ॐ अं० हं नदक्षिणगण्डपादकी॥ॐ अं० वामगण्डपादकी॥ॐ अं० मं० लु० मं०
अदलनकुपादकी॥ॐ अं० रुतीनउर्ध्वदलनयकुपादकी॥ॐ अं० मं० धाजातअधस्तपादकी॥ॐ अं० अं० न
ग्रहीसुर्ध्वपादकी॥ॐ अं० अं० केवलातानमध्यपादकी॥ॐ अं० अं० महात्मनजिकार्योपादकी॥ॐ अं० कं० काधद
क्षिणहस्तपादकी॥ॐ अं० वं० वलुदक्षिणवाहूदण्डपादकी॥ॐ अं० गंपुवणुदक्षिणहस्तमनिर्वध्यपाद
की॥ॐ अं० पं० निवदक्षिणहस्तपादकी॥ॐ अं० अं० कं० उदक्षिणहस्तकनीगुलीषुपादकी॥ॐ अं० वं० कूर्मवाम

दीक्षा
१८

संधपादकी॥ज कैं प्रकनप्र वामबाहुपादकी॥ज जें वरुम्वर वामहस्तमनिवाधपादकी॥ज मंजुसुवा
महस्तपादकी॥ज जें सेंमोस वामहस्तकनागुलीषपादकी॥ज टें सामन्व नदक्षिणरिचपादकी॥ज पें ला
गुलीसदक्षिणान्न वामपादकी॥ज उ दालकद दक्षिणजानो पादकी॥ज रुं मूर्धना निग दक्षिणजं पाः
यीपादकी॥ज लैं उमा कान दक्षिणपाद पादकी॥ज तें आघाटीन वामरिचपादकी॥ज थें दिगु वामा
न वामपादकी॥ज दैं धात्रीन वामजानो पादकी॥ज धें मीन वामजं घायी पादकी॥ज नें भस्त्र वामपादपा
दकी॥ज पें लाहित दक्षिण पाः पादकी॥ज रुं शिखीन वामपाः पादकी॥ज वें दृगु पृष्ठ वसपा
दकी॥ज रुं द्विगु नाहि मध्यपादकी॥ज में महाकाल हृदय मध्यपादकी॥ज यें वालीन वमध्यपाद
की॥ज नें उज्ज्वलीन वकपादकी॥ज लैं पिनाकीन मासपादकी॥ज वें रज्ज्वानन्द सायमध्यपादकी

७
१८

ज नें वज्रानन्द मूर्धनि मध्यपादकी॥ज पें सतानन्द मूर्धनि निपादकी॥ज सें रुग्ण लुकपादकी॥ज रुं लाः
गुलीन प्रान्नधानपादकी॥ज कैं ४ सर्वरुकाधपादी गुष्ठुगुच्छि मध्यपादकी॥ॐ नित्य वार्त्तिन्या स॥
॥ ॥ ज कालिकालि महाकालि मास प्रान्नितलजनी॥ जों कैं वक रुग्ण रिव देवी मी मी पश्यतुल
प्रवृष्टी हृदयद्विष्ट हृदयपादकी॥ज नमारुगवतिरुग्ण वाम मूर्धनि निवधिन मी स रुक्लि कपालख
दुगिवाविलि रुन धम पव मम ॥ ॥ ग्रह २ मा वय कैं ३ रुट्णीना दूतिलि वसिपादकी॥ज कैं कैं कैं
शीखा दूती निखायी पादकी॥ज उला लिआ सिमहि आसर्व पुरुष सर्वदिआ दिर्लि आसि उल्लिखिआ
सर्वदुष्ट रुग्ण रवी आशी कव दूतिक वय पादकी॥ज वक नक महानक वाम मूर्धनि वी अवतन रखाः
हापी नय दूती नय पादकी॥ज गुच्छ कृत्तिक कैं रुट् मम सर्वपिडवान्य ऊतु मनु गनु दू लु पयागम दि
कान्य नक नात्का नाय नात्क निव्यक्ति नात्का न रुन २ दष्टाक नात्कि कैं कैं रुट् गुच्छ कैं कैं कैं कैं

दनी अक्षुपादकी ॥ खादकासुने निवसि ॥ अक्षु न उमन ॥ ॐ दिवदूति न्यास ॥ ॥ हृदयस ॥ ॐ अवागीश्वरी शूँ
नल गगनलोक लागगर्हमिनी गगनलोक अमृतसंस्थानिनी गगनानन्ददवगगनोत्थावतु ४ षष्ठिलक्षका
टिसिद्धि वतु ४ षष्ठिलक्षकाटि यागिनी पादकी ॥ अहि ॥ ॐ माया अक्षुँ वल स्वर्गलोक लागगर्हमिनी ॥ स्वर्ग
लोक अमृतसंस्थानिनी स्वर्गनन्ददव स्वर्गान्ता ॥ वती लक्षकाटिसिद्धि ॥ वती लक्षकाटि यागिनी पादकी ॥
लिङ्ग ॥ ॐ माहनी शूँ वल पवननाक लागगर्हमिनि पवनलोक अमृतसंस्थानिनि पवनानन्ददव पवनान्त
षा ७ लक्षकाटिसिद्धि ॥ ७ लक्षकाटि यागिनी पादकी ॥ गुडस ॥ ॐ हाना अक्षुँ वल मयलोक लागगर्हमि
निनी मयलोक अमृतसंस्थानिनि मयानन्ददव मयान्ता ॥ अक्षुँ लक्षकाटिसिद्धि ॥ अक्षुँ लक्षकाटि यागिनी पा
दकी ॥ बीजस ॥ ॐ की मयत्रि शूँ वल नागनाक लागगर्हमिनि ॥ नागलोक अमृतसंस्थानिनि नागानन्द
दव नागान्ता ॥ लक्षकाटिसिद्धि वल जिलक्षकाटि यागिनी पादकी ॥ निन ॥ ॐ की शूँ वल ॐ नुनील

[illegible]

दीक्षा-
२०

ह्रीं ह्रीं माये दक्षिण कुंज पाद पाद की॥ अं जी न हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं माये वाम कुंज पाद की॥ अं जी न हूं ह्रीं ह्रीं
महो वम नाये दक्षिण नृपादी गुलिषु पादी गुलीषु पाद की॥ अं जी न ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं पिव नाये वाम
वामान पादी गुपादी गुलिषु पाद की॥ ह्रीं निशानिका सुक नास॥ ॥ त्रं अ नमः अमृषु यदुं ललाः
उपाद की॥ अं उर्द्ध कली दुं कली पाद की॥ अं कलित निखरुं कली रवायी पाद की॥ अं विमुक्ति दुं जि का या
पाद की॥ अं ता नका कि दुं नय या पाद की॥ अं पिमल युवा ४ पाद की॥ अं निहृत उ दुं दं द्या या पाद की
॥ अं कुरुं २ दुं अ सु या पाद की॥ अं हृ सु रं नाल म (ध) पाद की॥ अं नृ स २ दुं वा कृ य पाद य पाद की ॥
अं विमृ २ दुं क (पृ) य न्त्र पाद की॥ अं वे पा या यै ला क नृ प स रु म प नि व र्ति नी ना दुं कृ षु कृ य पाद की॥ अं
नृ द २ दुं हृ दि म (ध) पाद की॥ अं कृ २ दुं ना री पाद की॥ अं वि नि २ दुं नि त म्ब पाद की॥ अं हि नि २ दुं कः
द्यायी पाद की॥ अं हि नि २ दुं लिं ग पाद की॥ अं वि २ दुं गु क पाद की॥ अं प्रा स नि २ दुं दक्षिण नृ पा

५
२०

द की॥ अं अ म नि २ दुं वामान पाद की॥ अं वि डा व नि २ दुं प र्वा य पाद की॥ अं कौ ह नी २ दुं दक्षिण जा
नृ पाद की॥ अं मान नि २ दुं वाम जानू पाद की॥ अं सं जि व २ दुं दक्षिण जं द्यायी पाद की॥ अं ह नी २ दुं वा
म जं द्यायी पाद की॥ अं अ नि २ दुं दक्षिण गुल्फ पाद की॥ अं धू नि २ दुं वाम गुल्फ पाद की॥ अं धू नि २ दुं
दक्षिण पाद पाद की॥ अं न मा मा हृ ज ना य दुं वाम पाद पाद की॥ अं वाम (पु व न द वी र्द्ध) पादी गुल्फ
या पाद की॥ ह्रीं नि म रु त व पु न्ना स॥ ॥ त्रं अ हूं क (पृ) पाद की॥ अं उं मुख पाद की॥ अं उं गु क पाद की॥
अं उं पाद या पाद की॥ ह्रीं नि बी ज यं व कं न्या स॥ ॥ क (पृ) ॥ त्रं अ हूं ह्रीं प हं ना नि का ये ह्रीं हूं क ना धि सां
सी हूं ह्रीं वि उ र्द्ध सा कि नी य प्र क र्ति पू री त्व ज्ञा सानं द द व पाद की॥ हृ दि॥ अं धा न म्ब धा न म्ब धा नाः
मू र्खी ३ व द नृ पा ये ह्रीं म कु वि कां कीं ह्रीं ह्रीं नृ ना हृ त का कि नी य गुण प्र वि वि स्वा न न्द द व पाद

दीक्षा.
२१

की॥ नारो॥ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ वरुण निरव ऊँ ऊँ वरुण धिलौ ली लौ लौ लौ मानि पून कला किनीय महा पूनी मणी
मनन्द दव पाद की॥ लिंग॥ ऊँ ऊँ कठि कारे कल दिपाये ऊँ ऊँ पदा धि नां वी वूँ मूँ स्वा धि रुका
न ना किनीये धी पूनी मूँ नू गृही ॥ मनन्द दव पाद की॥ ३ ॥ ३ ॥ जन मारु गव निहूँ कम नाये कां
नूँ उव ना धि जं डी यं मूँ आ धा न ग किनीय मन पूनी मित्रा नन्द दव पाद की॥ ४ ॥ मया॥ ज कि नि २
विष्णु का क नाये ऊँ ४ ॥ वूँ वूँ तला धि लौ ही ऊँ ऊँ आ हा हा किनीय पू पूनी पीर पीर पीर मनन्द दव पाद
की॥ ललाटे॥ ऊँ ऊँ यो यो यो यो ललाटे ऊँ ५ ॥ मय य द पी पूनी कोली मनन्द दव पाद की॥ ६ ॥
तिज दिषे कयास॥ ॥ धन वूँ कृणामा धन ॥ ॥ पुन कृणामा धन ॥ गुन न सिषे ला सा ला वरु ॥ श्री
स्व धन (धन) मूल सग ॥ गुन स्य, नृ वरु न याय ॥ ७ ॥ का प्र का अरु मरु न द्य म री हान लाय

श्री
२१

॥ उँ म प्र का ल य २ निषा य य खा हा ॥ नारि... हदि... निव स ॥ ताल वान त्वा य ॥ आत्म गत्व न ॥ विद्या गत्व
॥ निव गत्व ॥ जा उ स वा हा स... व स पा न स ॥ ७ ॥ निमू मि ला हने का ॥ ॥ तगा द ह न्या स न सा ध य न ॥
॥ क ना दू ॥ पशु प ग व न्या स ॥ निमू मि ला ॥ डी लिंग ॥ पी नारो ॥ ऊँ ह द य ऊँ विन्द ॥ ॥ उँ निरवा
॥ निरवा हलिना काल विविन ह्य ॥ आग म कर्न ॥ अकू दू सा ध ल पा ॥ अमू दू न मा प दी का ॥ समय दीः
का स सा ध य न ॥ ॥ स्व स मूल मरु, षठ दू न ॥ हस ॥ पाद ॥ जान ॥ गुक ॥ नारि ॥ हदि ॥ विन्द ॥ ३
निरवा ॥ ८ ॥ ७ ॥ निमू मि ला हने का ॥ ॥ पुन ४ ॥ विष्णु क म न मूल मरु न, षठ १ ॥ विन्य
सग ॥ ॥ उँ निव गत्व धि का न ह्य प ना य निव स पाद की॥ निव सि ॥ उँ म आत्म गत्व धि का न ऊँ डी
ऊँ ऊँ मूँ प ना य ऊँ ह द य पाद की॥ हदि ॥ निव स डी प न म पा न... ऊँ धा न नृ प ह ४ धा ना मू र्वी ली मरी वनी

था। किं गुन्दकिं ना.. नवासा कूटन जाप ॥ धन ॥ क्र ३ म व क र्थवान ॥ अधा म र व हा ॥ ॥ ॐ नि स मः
 मयदीक्षा कपावन विधि ॥ ॥ गता प्राप्ता ॥ आना ध क्र म न क ल स र्म अ य ॥ लिख्य स्नान मान रुत ॥ श्री स च क
 पव पा व स्नान या च क क्र म ॥ ॥ र्म नान हू य न.. ला सा ला व ह या व म पु ल स स्नान ॥ ध्या म न पु ल स स्नान
 या व क ॥ ॥ लिख या क स्त प्र या पु रा पु र त्वं ठ न ॥ स्व प्रा ध्या य ॥ ग जा व ना रु र्म अ न्य ॥ प्रा सा द र्म ग ला ध नि ॥ श्री
 व स्त र्म ग ल क ला.. वृ र्म व व द स र्म य ॥ जान म य घ ट वे व.. प्र ध्या द क व क म् ॥ न दी र्म ग म र्म य र्म.. सा गः
 ना.. गो व द्रा क र्म ॥ क र्म मा क र्म क र्म.. क ल द या ग (ते र्म) ॥ ले न वा मा रु रि (वे व.. गु न सि धि य सो व री ॥
 क ल र्म व लि र्म लि र्म.. वि ल्म क वी ज पू न र्म ॥ प्र या मा ला न अ प र्म.. नी ला स ली पा नि जा ग र्म.. स ग न्ध पु ष क र्म.. आः
 द वे व मू ल र्म ॥ ८ ह्म लिख्य र्म र्म व.. पु रा र्म र्म पु र र्म व ॥ ॥ म् पु र र्म र्म व क मि.. म् पु रा नि वि नि दि अ न्

एकदृक्स्थधूम्रस्य नदीस्य जलं (सर्वकं) ॥ नदीर्हं गतदागमि जलसर्वं (सर्वकं) ॥ गलदृक्कमधुर्कं ॥ कृत
 कलास्थदृक्चनी ॥ सर्वं (गमधविजनास्य) ॥ काककालिस्थगृध्रकं ॥ मार्तण्डस्येव बाभ्रुर्लं ॥ कत्वायवम्भुधवि
 नी ॥ प्रासादसर्वगालेग ॥ स्वयंपतितमवयव ॥ किमिकानयनं गमि ॥ दूनाध्ययं वदंश्चित् ॥ लिखितं वीरपूज्यं
 नग्नमुदीपूकं कजिनी ॥ महिषाक्षवयवगुजीन ॥ वधवधनमवयव ॥ स्वयंदृष्टमृतेदृष्ट ॥ यिमध्यप्रमर्ततिः
 व ॥ अतितीक्ष्णविषास्य ॥ नक्षत्राहृतमना ॥ वृत्तिप्रप्राधाय ॥ ॥ अक्षरुणाकि ॥ ह्यमरुपविलम्बनायकं
 नक्षत्रकि ॥ ॥ रुद्ररुद्रय ॥ रुद्राकर्मसुदवष्टुजायातउय ॥ अर्मनिनायाय ॥ पूजाकूपनय ॥ नातसाकर्माव
 नयाय ॥ मलातसा ॥ नतकर्मरुकायाय ॥ दिगपूजा ॥ कलसुर्करुपातपूजा ॥ संपदापयायमाला ॥ नतादवाञ्च
 गुनत्रादिन ॥ मालकास्यनपूजा ॥ षाट्वाष्ट्यादि ॥ सागमर्पांग ॥ नित्यनैमिहिक ॥ कर्माकर्मावन ॥ पश्चिम
 अलिमधुल्लयाय ॥ पतवाहनसलवाय ॥ लिखितवमुहलकाउह ॥ लंभाय ॥ दीपावयादननका ॥ नक्ष

बीहा-
२४

लावहय॥ स्वस्तिकसुग॥ तृर्वचुनादि॥ रूतवलि॥ अथानामुनस्वस्त्यामायया॥ अमुनचतुपथवलि॥ हृथकृ
याथेन॥ तालवा॥ मर्तुन॥ भव॥ मनुन॥ भय॥ सत्ताय॥ गुन॥ नीनिनादनादि॥ मूलन॥ अमुन॥ अशकृन॥ अमुन
नादन॥ कवचन॥ अवगु॥ न॥ ॥ स्वस्त्यमूलमैत्रन॥ षडंगन॥ लिख्यालिकलीसूजा॥ नयपन॥ नयमकुन
चवक॥ पुनः षडंगनसाधलप॥ ॥ लिख्यालाहातनयासैवतन॥ स्वस्तिकवाय॥ विगतवृजालाहात
स॥ ॐ गलिवतलाधिकावस्तेपनायेपादकी॥ ॐ गधानंजीपनमधानधाननूपहृथा नामुखीहीमहिषनीवम॥
पिव॥ नून॥ रूट॥ विद्यानलाधिकावपवापनायेपादकी॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥
वायनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥
नम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥ ॐ गधर्माधनम॥

जी-
२४

नानंदप्रथ॥ मूलषडंगनपूजा॥ मूलमनुनहर्षवन्ध॥ द्वादशाङ्ग॥ षडङ्ग॥ पूजयन्॥ ॐ ह्रीं सिद्धयेपादद्वय
पादकी॥ ॐ ह्रीं मधयेजानुद्वयपादकी॥ ॐ ह्रीं विष्णुयेउनुद्वयपादकी॥ ॐ ह्रीं लक्ष्मीगुक्पादकी॥ ॐ ह्रीं
दीक्षयेनालोपादकी॥ ॐ ह्रीं मालिनेरुद्वयपादकी॥ ॐ ह्रीं लिवायेकपादकी॥ ॐ ह्रीं वसुमखायेमखपाद
की॥ ॐ ह्रीं नासाधुमायेनासाधुद्वयपादकी॥ ॐ ह्रीं कटकायेकर्णद्वयपादकी॥ ॐ ह्रीं हनिकलीशरुपादकी
॥ ॐ ह्रीं मखलिनीसिपादकी॥ ॐ मिद्वादशाङ्ग॥ ॥ ॐ ह्रीं सर्वज्ञानाद्वयायपादकी॥ ॐ ह्रीं अष्टगुरुजामा
लिनीरुपिलिजसस्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीवद्वनिश्रनादिवाधलिखायेवोषट्॥ ॐ ह्रीं वज्रिलिवज्रधवायसमनुकव
यह॥ ॐ ह्रीं नावानिषमूलकुलकि॥ सहस्रनमिन्ननययायवषट्॥ ॐ ह्रीं नमनुसुअकलीकिलिलीहूम
हापेपुपफायसहस्राङ्गयहर्षट्॥ ॐ मिद्वादशाङ्ग॥ पूज॥ मूलमनुनहर्षवन्ध॥ ॥ पुनः द्वितीयमपुल

दीक्षा-
२५

याया॥साधलप॥ॐ पुथिवितत्वाय पादकी॥ॐ पुथिवितत्वाधिपतय वक्रन पादकी॥तिरवा॥ॐ आपतत्वाय पाद
की॥ॐ आपतत्वाधिका न विन्दुस्त्वान पादकी॥ॐ जगत्तत्वाय पादकी॥ॐ जगत्तत्वाधिपतय हृदय पादकी॥ॐ
वायुतत्वाय पादकी॥ॐ वायुतत्वाधिका न नासो पादकी॥ॐ आकाशतत्वाय पादकी॥ॐ आकाशतत्वा
धिका न गुड पादकी॥ॐ वक्रतत्वाय पादकी॥ॐ वक्रतत्वाधिका न जानूदय पादकी॥ॐ विष्णुतत्वाय पादकी
॥ॐ विष्णुतत्वाधिका न पाद दद्या पादकी॥ॐ रुद्रतत्वाय पादकी॥ॐ रुद्रतत्वाधिका न रुद्र दद्या पादकी॥
षडङ्गन साधयत्॥तिरवा॥विन्दु॥हृदय॥नासो॥गुक्क॥जानो॥हृदया॥पादया॥ॐ तिलुष्टि॥ ॥ पाद
॥हृदया॥जानो॥गुक्क॥नासो॥हृदि॥विन्दु॥तिरवा॥संज्ञान॥ ॥तिरवा विन्दु॥हृदय॥नासो॥गुक्क॥
जानो॥हृदया॥पादया॥तिमि॥ॐ तिमिस्त्वान साधयत्॥ ॥समयवनिष्ठन ता सैधमनुन साधयत्॥ ॥

पी-
२५

ॐ श्रीधर्मपुनः समनयति नमः॥अनयान सधिय॥मलिनी॥लवनासि॥प्रिविद्या॥यात्रिका सुक॥दादत्ताङ्ग॥ष
डङ्ग॥षट्दुमि॥अहर्षवक॥ ॥पुनःषडङ्गन साधलप॥ ॥ॐ नमो गवति हृत्कमल नाये हृदयाय
पादकी॥ॐ श्रीजतिमानयी॥ॐ जतिं श्रीं गतिनीतत्वा ध्या॥ॐ उवना क्षममल्लक धा पुत्रा वा न वक्र स्त पा
दकी॥ॐ वेसुष स पादकी॥ॐ पुथिवी वक्रा श्रीं य पादकी॥ॐ वक्र दवता ह म वरुणा धा न वक्रु॥ॐ प्रथम वक्रु ॥
॥न्यासा॥ॐ श्रीं कृत्तिकाये श्रीं लिखस्व हा॥ॐ श्रीं जालीधनयी॥ॐ नां नी नू श्रीं गतिनी श्रीं पद्माक्ष वृद्धि न
त्यत्र कक्ष गुप्ता धिस्तन वक्र स्त पादकी॥ॐ वरुण मय न ल पादकी॥ॐ श्रीं श्रीं श्रीं पत्र कथ पादकी॥ॐ विष्णु द
वता सुक्र वरुणा धिस्तन वक्रु लिखस्व न क्षात्वा विन्यसत्॥ ॥ॐ श्रीं श्रीं श्रीं व र्वन लिखाये वा षट्॥ॐ श्रीं
श्रीं श्रीं श्रीं लाकिनीये श्रीं वरुणा ध्या नृकान गत्वा मास क्षा गुमनी पून वक्र स्त पादकी॥ॐ उठलतथ

दधनपरं पादकी॥ मज्जवर्णुन उदवना॥ मनिपूवकनाहिसु नदयपर्यन्तं विनयत्॥ ॥ॐ॥ धानत्रधानामः
स्वीवद्वनूपाये ऊंकवराय हूँ॥ श्रीकामरूपी १० कांकिं कूं कूं काकिनीयस्तं कलाधाः प्रकिंतिनत्वमधधाउत्रनाह
गवक्रस्तपादकी॥ कविगद्यद्वयजस २० पादकी॥ ॐ कूं वापुवक्रस्तं स्वीधनदवनाहवितवर्णुः ११ मनाहत
वक्राय पादकी हृदयकलपर्यन्तं॥ वपुर्वक्रस्तं॥ विनयत्॥ ॥ॐ॥ कूं किं मरुनिकाये जीनप्रयाय
वषट्॥ श्रीपूवृगिनिपी १० सां हिंस्तं सां साकिनीस्तं कलाधाः प्रनूवतत्वत्रिधाउविपुद्ववक्रस्तपादकी॥ अम
म्रा २० स्वीउजस १६ प्रउजजीव्रं ३ १ पादकी॥ नीलवर्णुगान्स्तनक्रमधपर्यन्तं धात्वा॥ विपुद्ववक्रं॥ ॥
॥ॐ॥ जजिमानपी १० जंजीहूं सां जकि नीलवर्णुवनाधमिनतत्वकिलिशविर्वाकाहनाये उ ११ म्राय हूँ॥ काम
रूपी १० ऊं ऊं ऊं सां हाकि नीदवीस्तं पचाधारागतत्वमक्राधाउत्राहवक्रस्तनदकपादकी॥ लालि
ववक्रं पुन्यानि ३ तनिर्जनपादकी॥ २० एषाहानवक्रं मष्टं॥ २० तिषट् वक्रनामविलासनम्राधावादिलल

यदि आधार्ता न पुनः आधार्ता दिलला टा न विन्यसत् ॥ ॐ निषट् च कृशिय साधन विधि ॥ ॥ यथाश्रम
 प्रकारं च यथागि साधन ॥ यद्युनाषट् सिद्धाश्च याजानां निष्कौलिकी ॥ ॥ पुनः निनाकं न्यास
 धयत् ॥ ॐ अहं मंत्रमानन्द हं ॥ सा सिद्धि दायक ॥ ॐ पनापन दूँ दूँ दूँ दूँ ॥ ॐ क्लीविक पादकी ॥ पा
 ॥ ॐ अहं उका ना नूप ह् ॥ उमडि वलामिक ह् ॥ मलिना हा न दूँ दूँ दूँ दूँ ॥ मली कलामिक पादकी
 ॥ जानो ॥ ॐ अहं नवकान ह् ॥ गक लुल गुकान ह् ॥ जीक लुला कं ॥ अहं श्रीक लुलिनि दूँ दूँ
 दूँ दूँ ॥ श्रीक लमा लिनि पादकी ॥ लिं ॥ ॐ अहं कमल दीप ह् ॥ ख कलाना हि ॥ ग ह् ॥ गकाल
 ह् ॥ ॐ अहं उविश्रमाल ह् ॥ वहाद नान धमनि ह् ॥ कृपाप ह् ॥ दूँ दूँ दूँ दूँ ॥ श्रीकाम स्त्री पादकी ॥ हदि
 ॥ ॐ अहं मक लु कृपा ग ह् ॥ अस्ते नाम्ना नक ह् ॥ व लु लु लु लु लु लु ॥ ॐ श्रीखरग स्त्री पादकी ॥

[illegible]

३१

[illegible]

खपादकी॥ दूथ॥ अकूंदक्षिनक (धूपादकी॥ दक्षिणक (धूपादकी॥ अत्रिं वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अकां
 विवकपादकी॥ मना॥ अयेक (धूपादकी॥ कं०॥ अऊं हृदिपादकी॥ हृदि॥ अऊं हृदिपादकी॥ हृदि॥ अऊं हृदिपादकी॥ हृदि॥
 दक्षिणक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अघां दक्षिणक (धूपादकी॥ दक्षिणक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥
 वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥
 लुथापादकी॥ मार्ग॥ अघां दक्षिणक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥
 दक्षिणक (धूपादकी॥ दक्षिणक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥
 दक्षिणक (धूपादकी॥ दक्षिणक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥
 किं वामक (धूपादकी॥ खववका॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥
 किं वामक (धूपादकी॥ खववका॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥ अनें वामक (धूपादकी॥ वामक (धूपादकी॥

[illegible]

दीक्षा.
२०

विष्णुं क्लीं किलि २ विष्णुं क्लीं किलि कडिका नन्दनाथली कडिका पनाचा दवी पादकी ॥ नमो नमो गवति घा
नमो कडिकाये जं क्लीं क्लीं ॥ पानम पानम पानम पानम विष्णुं क्लीं किलि २ विष्णुं पादकी ॥ द्वां हृदयाय स्वा
दि ॥ तादना ॥ पूजन ॥ विन्दुगता ॥ आवाहनादि मानि पूजा ॥ जाप ॥ स्तोत्र ॥ मालिनी ॥ माहना
या ॥ अग्रगन्धादि ॥ तता पृष्ठा अर्लिं कृत्वा ॥ मूलमन्त्रा ॥ उं क्लीं क्लीं सममालिनी ०० स्वाहा ॥ क्लीं पादकी ॥ अक्षत
नर्घपात्रादकनसह ॥ उत्तरतुन पृष्ठा अर्लिं ॥ तादनी चालनं कृत्वा ॥ धूपत्वा ॥ शिष्याहस्य ॥ लंघन ॥ तिः
पानलि वसुक्कयक ॥ वृत्तिपृष्ठा अर्लिं ॥ तता पापहरकली ॥ मन्त्र ॥ षट्प्रीति नितनायाति न सत्त्व गुलिक
सहकृति सुकी गुलि प्रमान ॥ पादसं पद्मकाहयाथ ॥ अंगुलि ॥ कमानी स्रप ॥ कमानी स्रप पंचवर्ण ॥ पा
परकली ॥ ताउयन मन्त्र ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हां हलिवनत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हं हवि

७
२०

वृत्तत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ उं ॥ मादतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ वं ॥ अष्टतत्वा पाप
भावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हिं ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हं ॥ सर्वतत्वा पाप
भावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ सें ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ के ॥ अष्टतत्वा पाप
भावनाय स्वाहा ॥ ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ जति ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ जाप ॥ १० ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हं ॥ वि
यातत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ उं ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हं ॥ वि
कं ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ मं ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हं ॥ वि
मं ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ वं ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हं ॥ वि
मं ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ नं ॥ अष्टतत्वा पापभावनाय स्वाहा ॥ उं ॥ ~~ह्रीं ह्रीं ह्रीं~~ हं ॥ वि

दीक्षा.

32

[illegible]

७३

पूजयन् ॥ हस्ती जनीवध पूजयन् ॥ त्रैगुण्य कविकर्णरुद्रममसर्वापदवान्यजुमनुमनुवूर्ध्वप्रथागादिका
न्यनरुतात्कावापनाकनिष्ठातिमानसर्वाहन २ इत्युक्तलालिहं क्रीडं रुद्रगुण्य कविकर्णश्रुदनी
नृमुपादका ॥ ॥ पुनः पूलषठंगनसाधयन् ॥ निवसिपूजयन् ॥ ॥ ॥ महाविद्यालिनिस्मिन् ॥
पुनः पूलषठंगननिवसिपूजयित्वा ॥ आवाह्य ॥ आनिमडा ॥ ॥ नमोदककाष्टमादाय ॥ रुद्रजलिः
वध ॥ दककाष्टविय ॥ त्रैगुण्य कविकर्णरुद्रममसर्वापदवान्यजुमनुमनुवूर्ध्वप्रथागादिन्यनरुतात्
कावापनाकनिष्ठातिमानसर्वाहन २ इत्युक्तलालिहं क्रीडं रुद्रगुण्य कविकर्णश्रुदनीश्रुमुपादका
॥ पुनः पूलषठंगननिवसिपूजयित्वा ॥ निवसिपूजयन् ॥ ॥ ॥ महाविद्यालिस्मिन् ॥ पुनः पूलषठंगननिवसिपूजयित्वा
यत् ॥ आवाह्य ॥ आनिमडा ॥ पुनः दककाष्टमादाय ॥ मनु ॥ त्रैगुण्य कविकर्णरुद्रममसर्वापदवान्यजुमनुमनुवूर्ध्वप्रथागादिन्यनरुतात्
कावापनाकनिष्ठातिमानसर्वाहन २ इत्युक्तलालिहं क्रीडं रुद्रगुण्य कविकर्णश्रुदनीश्रुमुपादका ॥ पुनः पूलषठंगननिवसिपूजयित्वा ॥ निवसिपूजयन् ॥ ॥ ॥ महाविद्यालिस्मिन् ॥ पुनः पूलषठंगननिवसिपूजयित्वा

दीक्षा
२३

मंडलं लोहं च यदंतकां च सुहां कथ्यते ॥ पूर्व लक्ष्मी विजानी यातु ॥ आग्नेयाग्निघातकं ॥ दक्षिणमन
लेविद्या ॥ नमस्यधनेहा निवा ॥ पश्चिमवसुधा धां हं वायुया ॥ लक्ष्मीकमवच ॥ उरुधनलाहाय ॥ लोहमपहिवर्धः
ना ॥ मर्मत्रवहिस्यात्पन ॥ पुनः साधु ननुदा ॥ दक्षकासूकपातन ॥ रुलारुलसुक ॥ मध्यपातनशुहं
॥ दिगेषु पश्चिमाह न पूर्वगुरु ॥ दक्षिणमण्डलं तथा ॥ लोहमनगुरुं विजातु ॥ आग्नेयाग्नेमस्य वायुयमण्ड
लं ॥ मण्डलं लोहमपयत ॥ दक्षकासूदवस्ते दक्षय ॥ ततो लिख्य हं नवासा ॥ वनिलि प्रिय ॥ यत्र गनः
पूजयतु ॥ यानि मूडा ॥ ततो लिख्य हं अलिना मण्डलं ॥ नृसाय मण्डलं लक्ष्मी ॥ लक्ष्मी मण्डलं लिलामानय
तु ॥ नृसा उपनि ॥ सुवर्णपद्मापविष्ठाया ॥ मूलेन पूषा जलि ॥ सुवर्णगुरुं पूषा दत्त वन्दनादि दीपना र्थ
कृत्वा ॥ मूर्धन्यं देवद वेनि ॥ पूर्वार्धममता विनी ॥ गृहाना र्थमया देह ॥ प्रसीदय नमः धनी ॥ मूलन स्वाहा
॥ मुनि ॥ स्वाभावका ॥ नमस्तु न ॥ गुणानां ह्यमादाय ॥ लिलामावाहयतु ॥ लिलामण्डलं ताउय मधुपयतु
॥ त्रिंशत्संतीर्णं लिलामण्डलं जामनि ॥ लोहं लोहं रुद्र स्वाहा ॥ कृतो ॥ पुनः लोहं मण्डलं नमः धनी ॥ त्रिंशत्संतीर्णं ॥

दी-
२३

मूर्धन्यार्थ ॥ नमस्तु न ॥ लिलामण्डलं देवस्ते नालयं गत्वा ॥ ॥ प्रमनरुली ॥ प्रमंशा मनदाहि न्य ॥ मूर्ति
दित्रनमगुरु ॥ सर्ववामार्थमिच्छि ॥ सर्वस्य विदायकं ॥ यत्र मण्डलं लक्ष्मी ॥ दक्षका हत्या वपाटके ॥ वामन
प्रमनरुपां पुनत्या वपाटके ॥ पातित दक्षका दक्षका हत्या वपाटके ॥ वामन पमित पादव ॥ मूर्ति वीना
दिपातके ॥ पूर्वार्धं विनीतुं चैव ॥ आग्नेयाग्निघातकं ॥ उरुधन विजानी यातु ॥ नमः धनी कलहे र
वतु ॥ वामनाधन लाहाय वायुया नाग जामेक ॥ उरुधनं चैव मयि ॥ किं विस्मि ॥ लोहं सक्त ॥ लिख सर्व
विनस्ति ॥ लिलामण्डलं न ॥ दिपाद पमिद वन ॥ गारुत्या वृक्षघातकी ॥ मण्डलं लोहं मूर्ति मूर्ति मूर्ति
पहामा दिर्क तथा ॥ कोमा विनीतमलाच ॥ मूर्ति र्वा विनिष्ठाया ॥ ॥ उर्वर्णं विस्म मूर्ति रुली ॥ पुन
दिगीय मण्डलं कामजतु ॥ मूलमण्डलं गनलि वहि पूजयित्वा ॥ लिख ॥ रुद्र ॥ मूलमण्डलं गन पूजनी ॥ पू
मण्डलं नृपपद्मापविष्ठाया ॥ नृव ॥ पूर्ववत्सुगन ॥ नृवमां नक ॥ मण्डलं ॥ वामनमण्डलं ॥ त्रिंशत्संतीर्णं ॥

